26

क्रोध

रोमियों 5:6-11

''सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?'' (रोमियों 5:9)।

सबसे बड़ा पाप परमेश्वर को यह बताना है कि उसे कैसा होना चाहिए। नये अनुवाद अब हमें यह बताते हैं कि परमेश्वर को क्रोध नहीं आता। कइयों का कहना है, ''वह केवल दु:खी ही होता है।'' ऐसा नहीं है! सच तो यह है कि पाप से परमेश्वर का दिल टूट जाता है, लेकिन उसे क्रोध आता है। इब्रानियों 10:26-31 तथा 12:28, 29 में यह बताया गया है और यह पूरी बाइबल में भी दर्शाया गया है।

पवित्र परमेश्वर क्रोध करने वाला परमेश्वर है। ''क्रोध'' शब्द बाइबल में 189 बार (हिन्दी बाइबल में इसका रूप 176 बार-अनुवादक) मिलता है। बाइबल में ''क्रोध'' शब्द ''कृपा'' से अधिक बार आया है। लोग आज वचन से झिझक सकते हैं, परन्तु बिना क्रोध के अनुग्रह की आवश्यकता ही नहीं होनी थी। न्याय कम करने का अर्थ है, पाप कम करना। परमेश्वर क्रोध करता है, भयंकर क्रोध, अत्यधिक क्रोध और उसके क्रोध का एक दिन है। प्रेम, क्रोध की भी मांग करता है, लेकिन क्रोध को प्रेम से ठण्डा किया जा सकता है। प्रेम तथा क्रोध साथ-साथ ही चलते हैं। उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। प्रेम क्रोध को वश में रखता है, पर उसे नाश नहीं करता। परमेश्वर ने वायदे किए हैं। कुछ सकारात्मक तथा नकारात्मक, परमेश्वर दोनों को पूरा करता है।

आधुनिक अनुवाद हमें यह बताते हैं कि यीशु को क्रोध नहीं आता था अर्थात मसीहियत हर क्रोध की निन्दा करती है। सुसमाचार की किताबें पढ़ें। यीशु में क्रोध था। मन्दिर की सफाई करवाते हुए यीशु हंस नहीं रहा था न आनन्दित होकर भजन गा रहा था। परमेश्वर में क्रोध है। आदम और हव्वा, नूह, सदोम-अमोरा, बाबुल तथा हनन्याह और सफीरा से पूछें।[1] रोमियों की पुस्तक अनुग्रह के बारे में है, परन्तु इनमें परमेश्वर के क्रोध के बारे में अधिक बताया गया है। (''क्रोध'' शब्द रोमियों की पुस्तक में बारह बार आया है।) अनुग्रह के लिए परमेश्वर की प्रेरणा पाए पौलुस ने अपनी पत्रियों में ''क्रोध'' शब्द का इस्तेमाल इक्कीस बार किया है। पाप के दोष के सम्बन्ध में परमेश्वर के क्रोध के लिए ''क्रोध'' शब्द का इस्तेमाल किसी भी शब्द से अधिक किया गया है।

क्यों?

क्रोध क्यों? पाप! क्रोध गम्भीर है, सच्चाई क्रोध है। क्या परमेश्वर नाराज़ हो सकता है?

असल सवाल है, ''परमेश्वर उससे अधिक नाराज़ क्यों नहीं हो सकता, जितना वह है ?'' परमेश्वर हमें क्यों सहन करता है ? आप उसकी जगह होते तो क्या करते ? हम अभी जीवित क्यों हैं ? परमेश्वर तो पाप से ही घृणा करता है (भजन संहिता 119:104)। जब भी हम पाप करते हैं, हम वही सब कर रहे होते हैं, जिससे परमेश्वर को घृणा है। पाप परमेश्वर से विद्रोह और परमेश्वर का अपमान है। परमेश्वर ने मनुष्य को अदभुत संसार दिया है। मनुष्य इसका तिरस्कार कर रहा है। शैतान ने परमेश्वर को झूठा कहा (उत्पत्ति 3:3-5) फिर भी हव्वा ने शैतान पर विश्वास कर लिया। जब हम पाप में रहते हैं तो हम वह सब अपने जीवनों में ले आते हैं, जिससे परमेश्वर को घृणा है।

मनुष्य को क्रोध दु:ख देने वाला लगता है, परन्तु परमेश्वर के लिए यह उसका नियम है। कुछ हद तक तो हमें यह पता है कि पाप ने मनुष्य के साथ क्या किया पर हमें इसका बिल्कुल पता नहीं है कि इसने परमेश्वर के साथ क्या किया। संसार में पाप के कारण ''मुख्य कष्ट सहने वाला'' परमेश्वर ही है। पाप ने यीशु को क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया। परमेश्वर के पास उस भयंकर और सही क्रोध का कारण था! अगर परमेश्वर यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने की अनुमति दे सकता है तो कल्पना करें कि क्रूर पापियों के साथ वह क्या कर सकता है। मनुष्य, जिसके साथ प्रेम करता है, उसे खतरा होने पर वह किसी का भी विरोध कर सकता है। परमेश्वर हमसे नियम, न्याय, क्रोध, पवित्रता, दया तथा भलाई में हर रूप में श्रेष्ठ है। जितना हम अधिक पाप करते हैं, उतना ही कम हमें इसका पता लगा है। पाप परमेश्वर के विरोध में है (भजन संहिता 51:4) और एक अर्थ में केवल परमेश्वर के विरोध में है।

परन्तु ''क्रोध'' परमेश्वर का अन्तिम वचन नहीं है। उसका अन्तिम वचन ''क्षमा'' है। क्षमा न किया जाने वाला पाप क्षमा पाने से इनकार करना है, क्योंकि ऐसा करके हम ऐसे स्थान पर पहुंच सकते हैं, जहां मन फिराना असम्भव है।

मन फिराव

परमेश्वर क्रोध करने में ''धीमा'' (सभोपदेशक 14:29; नहेम्याह 9:17; याकूब 1:19) है। पश्चात्ताप न करने वाले हर पापी तथा हर पाप को दण्ड दिया जाएगा। पापी केवल इतना कर सकते हैं कि वे पश्चात्ताप करें। पाप बुनियादी है। पश्चात्ताप भी बुनियादी होना आवश्यक है। इस सुसमाचार का संदेश पहले हमें हमारे पापी होने के बारे में फिर हमारे उद्धार के बारे में बताता है। मन फिराने के लिए यह आज्ञा कठिन है, पर इसे माना जाना आवश्यक है।

बाइबल के सब प्रचारकों ने एक ही विषय पर चर्चा की है और वह विषय ''मन फिराव'' है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने एक ही वाक्य का संदेश ''मन फिराओ, नहीं तो'' दिया। यीशु ने अपनी सेवकाई का आरम्भ यह कहते हुए किया कि ''मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो'' (मरकुस 1:15)। बिना मन फिराए क्षमा मिलना असम्भव है। यूहन्ना ने बिगड़ी हुई कलीसियाओं को मन फिराने के लिए कहा (प्रकाशितवाक्य 2; 3)। पापी अगर न चाहें तो परमेश्वर भी उनको बचा नहीं सकता। धार्मिक गुट बिना सच्चाई, ज्ञान, मन फिराव या आदेश मानने के उद्धार दिलाने की पेशकश करने की कोशिश करते हैं। पापी लोग परमेश्वर के क्रोध के नीचे हैं। संसार ऐसी मसीहियत चाहता है, जो बहुत कम मांग करती हो और कोई आदेश न देती हो। बिना कमाए प्रेम को बिना शर्त क्षमा के साथ न मिलाएं।

मन कौन फिराना चाहता है ? ''मन फिराव'' (यू.: *metanoia*) एक दूसरा मन, नया मन या बदला हुआ मन है। व्यवहार बदलने से पहले आवश्यक है कि जिन बातों पर हम पहले विश्वास करते थे, उन को बदल दें। बदले हुए जीवनों से मन फिराव का फल दिखाई देता है (मत्ती 3:8)।

मन फिराव अनुग्रह और विश्वास करने का प्रत्युत्तर है (2 कुरिन्थियों 7:9, 10; रोमियों 2:4)। उड़ाऊ पुत्र नौकरी की तलाश में घर वापस आया था, पिता के प्रेम ने उसका मन और जीवन बदल दिया (लूका 15:17-24)। पापियों को पाप से वैसे ही घृणा करना आवश्यक है, जैसे परमेश्वर करता है। मसीही लोगों के लिए विश्वास और मन फिराव में जीवन बिताना आवश्यक है।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!